उपसंहार

प्रस्तुत शोघ–प्रबंध के अन्तर्गत अब तक स्त्री आंदोलन के भीतर और साहित्य– विशेष रूप से हिन्दी कथा–साहित्य के अब तक के रचनात्मक विकास के भीतर स्त्री चिंतन के विकास की टोह लेते हुए उसे रेखांकित करने की कोशिश की गई है। स्त्री चिंतन से सीधा मतलब है– स्वतंत्र स्त्री दर्शन। तमाम कमियों और अन्तर्विरोधों के बावजूद स्त्री चिंतन अपनी स्वायत्तता व स्वतंत्रता की दिशा में अग्रसर है। पश्चिम हो या भारत दोनों जगह स्त्री–चिंतन के विकास की एक लम्बी परम्परा है। पश्चिम के सीमोन द बोउवार से लेकर गर्डा लर्नर तक की परम्परा स्त्री चिंतन की दिशा में काफी उपलब्धियाँ हासिल की हैं; वहीं भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं के भीतर बुनियादी परिवर्तन की काफी कम गुंजाइश होने के बावजूद महादेवी वर्मा से लेकर डॉ० धर्मवीर तक स्त्री चिंतन की एक शृंखला जुड़ती है।

समकालीन स्त्री आन्दोलन का प्रमुख मुद्दा है– पितृसत्ता से स्त्री की मुक्ति। पितृसत्तामक अवधारणाओं और सांस्कृतिक प्रतीकों की अपनी व्यवस्था है जिससे स्त्री मुक्ति चाहती है। यौन शुचिता, सतीत्व, पातिव्रत्य आदि पितृसत्तात्मक व्यवस्था की प्रमुख अवधारणाएँ, मूल्य हैं जो स्त्री के स्वतंत्रता के मार्ग की प्रमुख बेड़ियाँ हैं। अब तो देहवाद का नारा भी उछाला गया है जो पितृसत्ता की चिर आकांक्षा और नवउपभोगवादी संस्कृति के पक्ष में ही जाता है। असली मुद्दा विवाह संस्था के लोकतंत्रीकरण का है जो विभिन्न स्त्री आन्दोलन खास रूप से प्रगतिशील स्त्री आन्दोलनों के भीतर उभरा है। साहित्य के भीतर भी प्रेम एवं सेक्स के मुद्दों के साथ स्त्री के आर्थिक अधिकारों और विवाह संस्था को लोकतांत्रिक बनाने की माँग दबी जुबान से आयी है। हालांकि रैडिकल फेमिनिज्म के तहत तो विवाह को पितृसत्ता का प्रमुख औज़ार मानते हुए विवाह संस्था के उन्मूलन की माँग की जाती है। इस माँग के

पीछे पितृसत्ता को खत्म कर आदिम मातृसत्ता को कायम करने की आकांक्षा दिखाई देती है। लेकिन इतिहास के अंधकार युग में न लौटा जा सकता है और न वापसी करना उचित ही होगा। मातृसत्ता ने यदि पिता को ढकने का काम किया है तो पितृसत्ता ने माता को। दोनों सत्ताएँ अतिवादी रही हैं और मानव जीवन को अपूर्ण और विषम बनाती रही हैं। अतः अब मातृसत्ता और पितृसत्ता में सामंजस्य की माँग उठने लगी है। दोनों के बीच संघर्ष को अनिवार्य बनाना किसी भी रूप में उचित नहीं कहा जायेगा। स्त्रियों के आदिम इतिहास के अंधकार युग में जाने की अपेक्षा इतिहास की रोशनी में नये मार्ग का वरण करना है। इसलिए आज स्त्री मुक्ति के प्रमुख मुद्दे हैं– स्त्री के आर्थिक अधिकार और तलाक एवं पुनर्विवाह की स्वतंत्रता। इससे विवाह संस्था पितृसत्तात्मक होने के बजाय लोकतांत्रिक होगी।

समाज में स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषण करने पर स्त्री–चिंतकों ने पाया कि पितृसत्तात्मक रचना ही वह मूल कारण है जिसने समाज में स्त्रियों की अधीनता को स्थापित करते हुए उसे दोयम दर्ज़े का नागरिक बना दिया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियाँ पुरुषों से हीन हैं और पुरुष उनसे श्रेष्ठ हैं। इसलिए स्त्रियों पर पुरुषों का नियंत्रण और प्रभुत्व जायज़ है। आज स्त्री अस्मिता की लड़ाई आधी दुनिया को मनुष्यता का दर्ज़ा दिलाने की लड़ाई है। स्त्री और पुरुष समाज की आधारभूत शक्तियाँ हैं जिनसे परिवार व समाज का समग्र ढांचा बनता है। दोनों में से कोई भी कमज़ोर पड़े तो समग्र ढांचे का खण्डित और असंतुलित होना स्वाभाविक है इसलिए दोनों के बीच सह–अस्तित्व का दर्शन आवश्यक है।

पितृसत्ता की निर्मिति की दृष्टि से अन्य सत्ताओं से अन्तर्सम्बन्ध और समीकरण पर चिंतन हुआ है। पश्चिम की स्त्रीवादी चिंतक गर्डा लर्नर ने मार्क्सवादियों के वर्ग सिद्धांत को चुनौती देते हुए पितृसत्ता को वर्ग के साथ–साथ नस्लीय अवधारणा से सम्बद्ध किया है, यानी पितृसत्ता, वर्ग और नस्ल का समीकरण तैयार किया। इसी तरह भारत के सन्दर्भ में पितृसत्ता, वर्ग और जाति व्यवस्था का समीकरण बनता है। निर्मिति की दृष्टि से इन सत्ताओं के स्वरूप पर विचार किया जाय तो पितृसत्ता, वर्ण–व्यवस्था

और राज्य तीनों सत्ताएँ साथ–साथ अस्तित्त्व में आई हैं। भारत के संदर्भ में इतिहासकार व स्त्री–चिंतक सुवीरा जायसवाल और उमा चक्रवर्ती ने इन सत्ताओं के समीकरणों पर प्रकाश डाला है। भारत में उत्तर वैदिक काल (1000 ई०पू०) में ही वर्ण–व्यवस्था के कायम हो जाने के प्रमाण मिलते हैं। पितृसत्ता और वर्ण–व्यवस्था दोनों साथ–साथ निर्मित होती हैं और इसी के साथ राज्य की संरचना भी अस्तित्व में आती है। पितृसत्तात्मक दमन का पहला ऐतिहासिक संदर्भ याज्ञवल्क्य और गार्गी प्रसंग में दिखता है। इस प्रसंग से वैदिक काल में स्त्रियों की अच्छी स्थिति होने के दावा और मिथक स्वतः निर्मूल्य हो जाता है। मध्यकाल की सामंती व्यवस्था में धर्म–तंत्र और राज–तंत्र का गठजोड़ स्त्री के लिए सबसे दमनकारी सिद्ध हुआ। शूद्र और अन्य निम्न वर्गों की स्थिति भी बद से बदतर थी। भक्ति–आन्दोलन के तहत शूद्रों और स्त्रियों ने धर्म, राज्य, वर्ण और जाति के दमनकारी रूप के ख़िलाफ़ अपनी स्वतंत्रता का उद्घोष किया है। भक्ति आन्दोलन के भीतर शूद्र और स्त्री वर्ग ही सक्रिय थे जिनके आन्दोलनों से सामाजिक परिवर्तन का संकट पैदा हो गया था जिसे उच्च वर्गों ने 'कलियुग' कहकर भर्त्सना की है। 19वीं शताब्दी में भी इन्हीं शूद्रों और स्त्रियों ने परिवर्तन का संकट पैदा कर जिसको 19वीं शताब्दी के औपनिवेशिक बंगाल के विभिन्न चिंतकों ने 'कलियुग' के रूप में पहचान की है। 15वीं शताब्दी का 'कलियुग' प्राचीन समाज के मध्यकाल में संक्रमण तो 19वीं शताब्दी का 'कलियुग' मध्यकालीन समाज का आधुनिक युग में संक्रमण दर्शाता है। इन ऐतिहासिक संक्रमणों का निर्माण शूद्रों और स्त्रियों की ऐतिहासिक शक्तियों ने किया है जिसे समाज की यथास्थितिवादी शक्तियों ने नकारने की कोशिश की, फिर भी वह इस परिवर्तनकारी इतिहास को मिटाने में सफल नहीं हो सकीं। 19वीं–20वीं शताब्दी के नवजागरण और उस समय के साहित्य ने शूद्र और स्त्री के प्रश्न को बहुत अहमियत नहीं दी। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के अन्तर्गत भी शूद्र और स्त्री की मुक्ति के प्रश्न स्थगित ही रहे, लेकिन शूद्रों और स्त्रियों ने इतिहास में अपनी उपस्थिति दर्ज़ करायी। इस समय बंगाल, महाराष्ट्र आदि क्षेत्रों में चल रहे स्त्री आन्दोलनों ने साहित्य को काफी प्रभावित किया। हिन्दी क्षेत्र में महादेवी

वर्मा के 'शृंखला की कड़ियाँ' और 'सीमान्तनी उपदेश' (संपादक : डॉ० धर्मवीर) जैसी पुस्तकों से स्त्री–चिंतन को मजबूत सैद्धांतिक आधार मिला। समकालीन स्त्री आन्दोलन के अन्तर्गत तो स्त्री चिंतन की दिशा में प्रभूत सैद्धांतिक लेखन हुआ, इसमें प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अनामिका, नमिता सिंह, मृदुला सिन्हा, क्षमा शर्मा, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, रोहिणी अग्रवाल, अरविन्द जैन, सुधीश पचौरी, राजेन्द्र यादव, राज किशोर, डॉ० धर्मवीर आदि ने पर्याप्त सैद्धांतिक लेखन किया जिससे स्त्री चिंतन पुष्ट हुआ। इसके अलावा स्त्री आन्दोलन की विभिन्न धाराओं के एक्टिविस्ट भी अपने कार्य एवं संघर्ष से स्त्री चिंतन के विकास में योग दे रहे हैं।

समकालीन कथा साहित्य अपने विषय–वैविध्य के कारण पुराने कथा साहित्य से बहुत भिन्न है। समकालीन स्त्री व पुरुष कथाकारों ने समाज की स्थिति को भली–भाँति देखा परखा है और उसे अनुभव के धरातल पर यथार्थ रूप में प्रकट किया है। इस स्थिति को चित्रित करने के लिए उसने नये भावबोध, नयी शैली, नया कथ्य तथा नयी भाषा को खोजा है। आर्थिक विषमता, परिवर्तित जीवन–मूल्य, पीढ़ीगत अन्तराल, निराशा, संत्रास के साथ–साथ अपरिचय एवं अकेलेपन की छटपटाहट को भी आज के कथा साहित्य में अभिव्यक्ति मिली है। समकालीन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में प्रायः स्त्री–मुक्ति और आत्म निर्भरता की बात करती रही है। रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों के बोझ से निष्प्राण होती नारी ने जब आज संघर्ष करने लगी तभी उनके अधिकार उन्हें मिलने शुरू हुए हैं।

महिला कथाकारों में जिनके लेखन से स्त्री–चिंतन को दिशा व गति मिली है, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, गीतांजलि श्री, क्षमा शर्मा, रजनी पन्निकर, सूर्यबाला, अनामिका, अलका सरावगी, चित्रा मुद्गल, मनीषा कुलश्रेष्ठ, मधु कांकरिया, शरद सिंह आदि प्रमुख हैं। वहीं पुरुष कथाकारों में प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, मदन दीक्षित, अमरकांत, विष्णु प्रभाकर, उदय प्रकाश, श्रीलाल शुक्ल, भगवान सिंह, मनोहर श्याम जोशी, राजकिशोर एवं डॉ० धर्मवीर आदि उल्लेखनीय हैं। 1990 के दशक से पूर्व

कथा–साहित्य में स्त्री के प्रश्न को विभिन्न कथाकारों जिसमें प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, भीष्म साहनी आदि ने अहमियत दी है, लेकिन उनकी स्त्री न परम्परा के आवरण से पूरी तरह से निकल पाई है और न ही उसकी कोई स्वतंत्र ज़मीन निर्मित हो सकी है। 90 के दशक और उसके बाद के समकालीन पुरुष कथाकारों के यहाँ स्त्री के आर्थिक अधिकारों और विवाह संस्था के लोकतंत्रीकरण जैसे मुद्दों की जगह प्रेम और सेक्स, विवाह संस्था से मुक्ति, देहमुक्ति आदि के मुद्दे ही प्रमुखता से उभरे हैं। स्त्री–चिंतन के नाम पर केवल पुरुषों जैसे करने की स्वतंत्रता की माँग ही बार–बार दुहराई गई है। हिन्दी कथा–साहित्य में समूचे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में कोई स्वतंत्र स्त्री–चिन्तन के दर्शन नहीं होते। अधिकांशतः पुरुषों जैसी व्यवस्था की ही आकांक्षा दिखती है। कोई स्वतंत्र व वैकल्पिक व्यवस्था का चिंतन उभरकर नहीं आ पाता है। यह अवश्य है कि दलित आन्दोलन इस दिशा में स्त्री आन्दोलन के लिए मार्गदर्शक शक्ति का काम कर रहा है। पाश्चात्य जगत में जहाँ स्वतंत्र स्त्री भाषा के क्षेत्र में काफी काम हुआ है, वहीं भारतीय संदर्भ में ऐसे किसी उल्लेखनीय कार्य की प्रतीक्षा है। इस तरह भारतीय स्त्री आन्दोलन तमाम कोशिशों के बावजूद अभी चिन्तन के धरातल पर कमज़ोर नज़र आता है उसे बुनियादी, मौलिक, स्वायत्त और स्वतंत्र चिन्तन के रूप में अभी विकसित होना है। भारतीय स्त्री चिंतन की कमज़ोरी का प्रमुख कारण भारत के पीड़ित वर्गों में सशक्त स्त्री आन्दोलन का न उभरना है। भारतीय स्त्री आन्दोलन अधिकांशतः उच्चवर्गीय स्त्रियों के हाथों में है, जो अपने ही अन्तर्विरोधों और सीमाओं के गुंजलक में फँसा हुआ है। इसके अलावा उसकी अपनी स्वतंत्र भारतीय ज़मीन निर्मित होने के बजाय अधिकांश में पश्चिम के स्त्री आन्दोलनों और चिंतन से सम्प्रेरित है। वहीं दलित आदि पीड़ित दमित वर्गों के भीतर स्त्री आन्दोलन अपरिपक्व है और वह उच्चवर्गीय स्त्री राजनीति की जाल में उलझा हुआ है। फिर भी यह तय है कि स्त्री की मुक्ति में ही सम्पूर्ण मनुष्य जाति की मुक्ति होनी है। आज स्त्री आन्दोलन के समक्ष गम्भीर चुनौतियाँ हैं, समाज की यथास्थितिवादी शक्तियाँ धर्म की आड़ लेकर इतिहास के खण्डहर से

निकल मुख्य धारा में काबिज़ हैं और वहीं पुराने ढांचे को मानव समाज पर थोपने पर आमदा हैं। दूसरी तरफ विश्व पूँजीवाद व साम्राज्यवाद की शक्तियाँ भी स्त्री को उपभोगवाद के जाल में फँसा रही हैं। इन दोनों चुनौतियों के बीच से ही स्त्री चिंतन की अपनी स्वतंत्र राह बनानी है।

दिनेशनंदिनी डालमिया की आत्मकथा 'मुझे माफ करना', पद्मा सचदेव की 'बूँद बावड़ी', शिवानी की आत्मकथा 'सुनहु तात यह अकथ कहानी', शीला झुनझुनवाला की आत्मकथा 'कुछ कही कुछ अनकही', मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुंडली बसै' तथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया', रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'हादसे', 'अपहुदरी', सुनीता जैन की 'शब्दकाया', मन्नू भण्डारी की 'एक कहानी यह भी', प्रभा खेतान द्वारा लिखी 'अन्या से अनन्या', चन्द्र किरण सोनरेक्सा की 'पिंजरे की मैना' तथा सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंज़े का दर्द', एवं निर्मला जैन की बहुचर्चित आत्मकथा 'ज़माने में हम' आदि महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय हैं।

समकालीन उपन्यासों में मानव जीवन के विविध परिदृश्यों को विचारधाराओं और दृष्टिकोणों से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। व्यक्त संवेदना आधुनिक परिवेश और परिदृश्य को समग्रता से अभिव्यक्त करती है। वैश्वीकरण का प्रभाव भी साहित्य में दिखाई दिया है। सभी स्त्री विषय उपन्यासकारों ने अपनी लेखनी को विविधमुखी बनाकर अनेकानेक समस्याओं को मानव संवेदना से अनुस्यूत किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ–सूची

(क) आधार ग्रंथ–सूची

1. अपने–अपने कोणार्क, चन्द्रकान्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2006
2. आदम और हौव्वा, मेहरून्निसा परवेज़, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972
3. आवाँ, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1999
4. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2010
5. अनादि अनंत, मधु भाधुड़ी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1998
6. इब्ने मरियन, नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं० 2010
7. इक्कीस कहानियाँ, कुसुम अंसल, स्पीड ब्रेकर प्रकाशन
8. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, अक्षर प्रकाशन, सं० 1975
9. उन्माद, भगवान सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2000
10. उन्नीस प्रतिनिधि कहानियाँ, मिथिलेश्वर, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, सं० 2001
11. एक कहानी यह भी, मन्नू भण्डारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2008
12. एक पत्नी के नोट्स, ममता कालिया, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1997
13. ऐ लड़की, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2008
14. कठपुतलियाँ, मनीषा कुलश्रेष्ठ, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं० 2008
15. कठगुलाब, मृदुला गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2010
16. कोहरे में कैद रंग, गोविंद मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2004
17. कोहरे में कैद रंग, गोविंद मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2004
18. कस्तूरी कुण्डल बसै, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2009
19. कुंतो, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा सं० 2016
20. खानाबदोश, अजीत कौर, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2010
21. खुशबू बनकर लौटेंगे, देवेन्द्र इस्सर, विद्यार्थी प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1991

22. गुम होती गौरेया, कुसुम अंसल, रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लि., गाजियाबाद, सं० 2008
23. गुड़िया भीतर गुड़िया, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2009
24. चमगादड़ें, मृणाल पाण्डे, पराग प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1977
25. चौदह फेरे, शिवानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2006
26. चितकोबरा, मृदुला गर्ग, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं० 1979
27. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2010
28. जहाँ है धर्म वहीं है जय, नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1993
29. जहाँ लक्ष्मी कैद है, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2001
30. जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं : चित्रा मुद्गल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, सं० 1992
31. ठीकरे की मंगनी, नासिरा शर्मा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1996
32. तिरोहित, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2007
33. दिलो दानिश, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2006
34. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2012
35. नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2003
36. निष्कवच, राजी सेठ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1995
37. परिन्दे का इन्तजार–सा कुछ, नीलाक्षी सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, सं०, 2006
38. पीली आँधी, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2001
39. प्रतिनिधि कहानियाँ, 83, मात्र एक मकान, कुसुम अंसल
40. पिछले पन्ने की औरतें, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2009
41. बोलने वाली औरत, ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1998
42. बेघर, ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2009
43. मुझे चाँद चाहिए, सुरेन्द्र वर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2015
44. मुझे नहीं मालूम, सुमन मलहोत्रा
45. मुस्कुराती औरतें : संपादक– शैलेन्द्र सागर, रजनी गुप्त, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, सं० 2008

46. मेरी कहानी, कमला दास, हिंदी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं० 2010
47. मेरे आका : तहमीना दुर्रानी, अनुवाद– मोजेज माइकल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2008
48. मित्रो मरजानी, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2010
49. यातना शिविर, सिम्मी हर्षिता, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं० 1990
50. रंगशाला, सिम्मी हर्षिता, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं० 2003
51. रसीदी टिकट, अमृता प्रीतम, हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं० 2011
52. रह गईं दिशाएं इसी पार, संजीव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2011
53. रुकोगी नहीं राधिका, ऊषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2010
54. लज्जा, तस्लीमा नसरीन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010
55. ललमनियां, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
56. वह तीसरा, दीप्ति खंडेलवाल, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1976
57. स्त्री कथा, संपादक–सुधा सिंह, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2005
58. समय सरगम, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2000
59. सीमान्तनी उपदेश, एक अज्ञात हिंदू औरत, संपादक– डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2006
60. साझा संस्कृतिः भारतीय फासीवाद का स्त्री –प्रत्युत्तर, संपादक– सुधा सिंह, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2008
61. सोने का बेसर, मेहरून्निसा परवेज, सत्साहित्य प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली, सं० 1991
62. सूरजमुखी अंधेरे के, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2000
63. शेष कादम्बरी, अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2002
64. हादसे, रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2005
65. क्षमा करना जीजी, नरेन्द्र कोहली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1995
66. त्रिशंकु, मन्नू भण्डारी, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1978

(ख) सहायक ग्रंथ–सूची

1. अंतिम दशक की हिंदी कहानियाँ : संवेदना और शिल्प, डॉ. नीरज शर्मा, वाणी प्रकाशन, सं० 2011
2. अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है, जया जादवानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. अस्मिता विमर्श का स्त्री स्वर, अर्चना वर्मा, मेघा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2008
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास (भाग–2), संपादक नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास, डॉ0 पारूकान्त देसाई
6. आदर्श हिन्दू भाग–3, लज्जाराम शर्मा
7. औरत की कहानी, संपादक– सुधा अरोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, सं० 2010
8. अद्‌भुत भारत, ए. एल बाशम, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी आगरा, संशोधित हिन्दी सं०
9. इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिन्दी कहानी, सूरज पालीवाल, वाणी प्रकाशन
10. इरफान हबीब, भारतीय इतिहास में मध्यकाल, संपादन और अनुवाद, रमेश रावत, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, सं० 2002
11. उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2003
12. उपन्यास की समकालीनता, ज्योतिष जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2007
13. उपन्यास के विरूद्ध उपन्यास, परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2012
14. उपन्यास साहित्य, डॉ0 विवेकी राय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
15. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
16. उपन्यासों के सरोकार, डॉ0 ई0 विजयलक्ष्मी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला सं० 2012

17. उत्तर औपनिवेशिकता के स्रोत और हिंदी साहित्य, प्रणय कृष्ण, हिंदी परिषद् प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, सं० 2008
18. कंकाल, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2003
19. कब तक नचाएंगी राधा को रंगमहल में इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिन्दी कहानी, सूरज पालीवाल, वाणी प्रकाशन
20. कर्मभूमि, प्रेमचन्द, दिल्ली, सं० 2005
21. कथा प्रसंग यथा प्रसंग, निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2000
22. काश, मैं राष्ट्रद्रोही होता, राजेन्द्र यादव, संकलन एवं संपादन– बलवंत कौर, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2010
23. गोदान, प्रेमचन्द, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, पुनर्मुद्रण 2011
24. ग्राम सेविका, मार्कण्डेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2000
25. चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 1993
26. जाति समाज में पितृसत्ता, उमा चक्रवर्ती, ग्रंथशिल्पी प्रकाशन, हिंदी संस्करण 2011
27. त्यागपत्र, जैनेन्द्र, पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली, सं० 2004
28. तापसी, कुसुम अंसल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2003
29. तितली, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
30. थेरीगाथा की स्त्रियां और डॉ. अम्बेडकर, डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सं० 2005
31. दलित चिंतन का विकास : अभिशप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर, डॉ० धर्मवीर भारती, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2008
32. दलित चेतना : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2001
33. दादा कामरेड की भूमिका से, यशपाल
34. दसवें दशक के प्रतिनिधि उपन्यास, प्रो0 मालती आदवानी, सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली
35. देवरानी–जेठानी की कहानी, पण्डित गौरीदत्त
36. नई सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार, संपादक– ममता कालिया, लोक भारती प्रकाशन, सं० 2009
37. निर्मला, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन नई दिल्ली, 2009

38. निराला रचनावली भाग–3, संपा0 नंदकिशोर नवल
39. नारी : उत्तरकथा, संपादन– राजेन्द्र यादव, अर्चना वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2002
40. नारी विमर्श और हिंदी साहित्य, संपादक– डॉ. ऊषा रानी, संजय प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2015
41. नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पहला सं० 1998
42. नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दे, संपादक– साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली वि.वि., सं० 2001
43. नागपाश में स्त्री, संपादक– गीताश्री, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सं० 2010
44. नवजागरण और प्रताप नारायण मिश्र, भगवती प्रसाद शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
45. नागपाश में स्त्री, संपादक गीताश्री, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली सं० 2010
46. परख, जैनेन्द्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
47. पुनर्जन्म वा सौतियाडाह, किशोरीलाल गोस्वामी
48. प्रतिज्ञा, प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन
49. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 15वां सं० 2003
50. भक्ति आंदोलन : इतिहास और संस्कृति, संपादक– प्रो. कुँवर पाल सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सं०
51. भारत की प्राचीन संस्कृतियां एवं सभ्यताएं, डॉ. एच. एन. दुबे, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2003
52. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, विपिन चंद्रा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली, 1997
53. भारतीय इतिहास में मध्यकाल : इरफान हबीब, संपादन और अनुवाद रमेश रावत, ग्रंथशिल्पी प्रकाशन, सं० 2002
54. भारतीय स्त्री : सांस्कृतिक संदर्भ, संपादक– प्रतिभा जैन, संगीता जैन, रावत प्रकाशन, जयपुर–1998
55. मानसरोवर खण्ड 1, प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2000
56. मानसरोवर भाग 2, प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन सं० 2008
57. मानसरोवर भाग–3, प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, सं० 2002

58. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, संपादक लईक अहमद, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, सं० 2005
59. महिला कहानीकार, प्रतिनिधि कहानियाँ के आवरण पृष्ठ से डॉ० पुष्पपाल सिंह
60. मीराबाई की पदावली, संपादक–आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद 22वां सं०
61. राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, डॉ. ओ. पी. गाबा, मयूर प्रकाशन, नोएडा 2005
62. रस्साकशी, वीर भारत तलवार, सारांश प्रकाशन, दिल्ली–हैदराबाद, सं० 2012
63. विदा दीपदान, देवेन्द्र सत्यार्थी, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1992
64. विदा, प्रतापनारायण श्रीवास्तव
65. वूमेन्स मूवमेन्ट, बारबरा डेंकार्ड
66. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
67. शेखर : एक जीवनी, भाग–1, अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, सं० 1984
68. स्त्रियों की पराधीनता– जॉन स्टुअर्ट मिल, अनुवाद–प्रगति सक्सेना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2002
69. स्त्री विमर्श : विविध पहलू, सं० कल्पना वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2011
70. स्त्री विमर्श का यथार्थ, ममता कालिया, किताबवाले प्रकाशन, सं० 2015
71. स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, संपादक– डॉ. संजय गर्ग, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 20.14
72. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति सं० 2009
73. स्त्री अध्ययन की बुनियाद, प्रमीला के.पी., राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2015
74. स्त्री अस्मिता : साहित्य और विचारधारा, संपादक– जगदीश्वर चतुर्वेदी, सुधा सिंह, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, सं० 2004
75. स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, रोहिणी अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, सं० 2011
76. स्त्री–पुरुष तुलना, ताराबाई शिंदे, मराठी से अनुवाद, जुई पालेकर, संवाद प्रकाशन, मुंबई–मेरठ, सं० 2015
77. स्त्रीत्व से हिंदुत्व तक, चारू गुप्ता, राजकमल प्रकाशन, सं० 2012

78. समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज, डॉ० श्रीमती प्रेम सिंह, डॉ० रिम्पी खिल्लन, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली
79. समकालीन कहानी, युगबोध का सन्दर्भ, डॉ0 पुष्पपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
80. समकालीन हिंदी कहानी और अम्बेडकरवादी आंदोलन, दिनेश राम, अकादमिक एक्सेलेन्स प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2006
81. समकालीन हिंदी कहानी, डॉ० पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, सं० 2011
82. समकालीन हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में अभिव्यक्त बहुआयामी विद्रोह, रेशमी रामदोनी, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
83. समकालीन हिन्दी कहानी, डॉ० पुष्पपाल सिंह
84. समकालीन हिन्दी उपन्यास : समय और संवेदना, (संपादक) डॉ0 वी0के0 अब्दुल जलील, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
85. समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना, संपादक– कल्पना वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं०– 2010
86. समसामयिक हिन्दी कहानियाँ, धनंजय वर्मा, भूमिका से
87. साठोत्तरी महिला कहानी, डॉ0 मधु संधु, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984
88. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, डॉ0 मैनेजर पाण्डेय, हरियाणा साहित्य अकादमी, सं० 2001
89. सोशल साइंटिस्ट (अंक 4–5, नवंबर–दिसम्बर 1975)
90. स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएं, उर्मिला गुप्ता
91. सुशीला विधवा, लज्जाराम शर्मा
92. सुनीता, जैनेन्द्र, पूर्वोदय प्रकाशन, सं० 2001
93. हिंदी कहानी परंपरा और प्रगति, डॉ. हरदयाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2005
94. हिंदी उपन्यास : सार्थक की पहचान, मधुरेश, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2002
95. हिंदी आलोचना और आज की कहानी, संपादक– विद्याधर शुक्ल, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद

96. हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थ बोध के विविध रूप, डॉ० कृपाशंकर पाण्डेय, समीक्षा प्रकाशन, शिवकुटी, इलाहाबाद, सं० 2010
97. हिन्दी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2002
98. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सातवां सं० 2009
99. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं० 2002
100. हिन्दी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2011
101. हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला, डॉ0 रोहिणी अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
102. शेखर : एक जीवनी विविध आयाम, डॉ0 रामकमल राय, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 1998

(ख) पत्र–पत्रिकाएँ

1. अभिनव कदम, अंक 28, दिसम्बर 2012– मई 2013
2. तद्भव, जनवरी 2010
3. नया ज्ञानोदय
4. पुस्तकवार्ता, जनवरी–फरवरी 2015, अंक 56
5. बहुवचन, अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक, अप्रैल–जून 2013
6. वर्तमान साहित्य, जनवरी–फरवरी 2000
7. वाक्
8. सम्मेलन पत्रिका, (शोध त्रैमासिक) भाग 101, सं० 3
9. समीक्षा, मई–जून 1976
10. हिन्दुस्तानी
11. हंस अक्टूबर 1995
12. हिन्दी अनुशीलन